विंस द सोल

वैशाली भदौरिया

BlueRose ONE

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Vaishali Bhadauriya 2023

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-5741-522-4

Cover design: Muskan Sachdeva
Typesetting: Rohit

First Edition: August 2023

अनुक्रमणिका

अकेले..... 1
आज मैं संजीव मांगती..... 3
इंसानियत..... 5
फ़क बराबर..... 10
ओ मेरे आँख के तारे..... 13
औरत-1..... 15
औरत-2..... 17
कर हर जंग फतह तू..... 21
करम..... 23
कहाँ है..... 26
कुछ झूठ..... 28
कोहिनूर हो गए..... 31
कौन हूँ मैं?..... 33
क्या है दोस्ती..... 36
गुलजार है..... 38
जिंदगी की रफ़्तार..... 40
जो बीत गई..... 43
तुम हो..... 45
तेरा याराना..... 48

तेरी चाहतों से..... 50
तो धूप भी मिलेगी..... 52
दर्द-ए-दिल..... 55
नदी और नालों का..... 58
नन्हीं सी जान..... 61
पिता और बचपन..... 63
प्रकृति को जान ले..... 66
बता दे खुदा..... 69
बदल गया..... 71
बदली है..... 73
बाप-बेटी का रिश्ता..... 75
मंज़र..... 77
माँ..... 79
माफ किया..... 83
मिट्टी से जन्मा हूँ मैं..... 85
मिला तू मुझे..... 88
मैं वो कहानी हूँ..... 90
मैं हारा नहीं..... 92
मौत..... 94
याद करो..... 97

वो ही बातें तेरी.....99
शहीद.....102
हसरतें.....108

अकेले

रात भी अकेली थी
दिन भी अकेले कट गए
इस जिंदगी की ठोकर भरी राहों में
हम किसीके साथ के लिए तरस गए

साथ तो बहुत से लोग चले
पर साथी कोई ना मिला
रास्तों में भीड़ से घिरी थी
फिर भी तन्हाइयों का एहसास था
चाहा किसीसे दर्द बांटना
पर हमदर्द कोई ना मिला

हमसफर बनाने की तमन्ना
बहुत थी इस दिल में
पर सफर ही मतलबी निकला
दिल लड़ता रहा तन्हाइयों से
तन्हाइयों का शोर भी
कभी कुछ कम ना हुआ

।

रिश्तों से डरते हैं हम
जबसे अपनों ने गैर किया
खामोशियों से लड़ते हैं हम
जबसे जिंदगी से बैर किया
बहुत ढूंढा इस दुनिया में
गैरों में अपनों को
पर सफ़र गुज़र गया
जख्मों को भरने में

अब तो मौत की बारी है
क्या फ़ायदा जिंदगी से लड़ने में

आज मैं संजीव मांगती

न जाने कितने लोग
हँसते-हँसते कुर्बान हो गए
इस धरा को एक बनाते-बनाते
लोग बंट गए जात-पात और धर्मों में
तोड़ लिए इंसानियत से नाते

अमीर ना हारा कभी
ऐश्वर्य और आराम पाते-पाते
और पैसों को उड़ाते-उड़ाते
गरीब बेचारा थक गया
जिंदगी का बोझ उठाते-उठाते

शहीद एक माँ का लाल हुआ
कुर्बानी की वो मशाल हुआ
पर नेताओं को ना आई शर्म
देश को लुटवाते-लुटवाते
उसकी नींव को गिराते-गिराते

पर्वत का भी शीश झुक गया
नदियाँ थक गई शर्माते-शर्माते
नारी का अपहरण हुआ
चीर के उसका हरण हुआ
उन दरिंदों को ना रहा होश
ना रुके वो उसकी हस्ती मिटाते-मिटाते

बच्चे सड़कों पर भीख मांगते
अपने उज्जवल भविष्य की
औरों से वो उम्मीद मांगते
ये देश भी करेगा तरक्की कभी
ऐसे कल कि वो नींव मांगते

अधिकारों से ना विहीन हो
आतंक से जो ना मलीन हो
जो उम्मीदों में विलीन हो
चल सूर्य से ऐसे कल का
आज मैं संजीव मांगती

इंसानियत

ईश्वर ने एक दुनिया बनाई
तूने सरहदों में छांट लिया
उसकी बनाई इंसानियत को
तूने मज़हबों में बांट लिया

अरे खो दिया अस्तित्व उसने
जब तूने इंसानियत की
मर्यादाओं को भी नांग लिया

मरे लोग अपनों के हाथों
तब इस दुनिया ने
महाभारत को भी जान लिया
गुरु बना शत्रु उसका
फिर भी उस एकलव्य ने
गुरु दीक्षा की ठान लिया
अभिमन्यु, कम उम्र एक बालक
धोखे से उसको मार दिया

अरे खो दिया अस्तित्व उसने
जब तूने इंसानियत की
मर्यादाओं को भी नांग लिया

पावन धरा, नदी और पवन को
तूने खुद ही मलिन किया
जीव-जंतुओं के प्राणों को भी
तूने ही तो छीन लिया
हरी-भरी मुस्कुराती धरा को
उसके मुस्कुराने के हक से
तूने ही तो वंचित किया

अरे खो दिया अस्तित्व उसने
जब तूने इंसानियत की
मर्यादाओं को भी नांग लिया

रिश्ते बस नाम के रह गए
तूने जब उनके दायरो को पार किया
जिस माँ ने नौ महीने
कोख में अपने खून से सींचा

तूने उसको भी उसके ही
घर से निकाल दिया

अरे खो दिया अस्तित्व उसने
जब तूने इंसानियत की
मर्यादाओं को भी नांग लिया

जिस पिता ने कांधे पर बिठाकर
तुझको सारी दुनिया घुमाई
दर-दर वह भटक रहा है
और इस उम्र में भी
करनी पड़ रही है उसको कमाई
अफसोस वो भी कर रहा होगा
कि कैसी औलाद को पैदा किया

अरे खो दिया अस्तित्व उसने
जब तूने इंसानियत की
मर्यादाओं को भी नांग लिया

भाई ही शत्रु बन बैठा
बहनों को भी पराया किया
दहेज की आग में झुलस गई

हँसती खिलखिलाती बेटियाँ
निःस्वार्थ खुशहाल इस दुनिया में
ना जाने किसने और क्यों
इन स्वार्थी रस्मों को पैदा किया

अरे खो दिया अस्तित्व उसने
जब तूने इंसानियत की
मर्यादाओं को भी नांग लिया

देवी समान नारी की यह धरती
इस समाज ने उस नारी को ही
उसके अधिकारों से विहीन किया
कन्यादान से महान दान को
बेटी के पैरों की बेड़ियाँ
और पिता का बौझ बना दिया
फिर आज की आज़ाद नारी को
कपड़ों और समय का दायरा दिया

अरे खो दिया अस्तित्व उसने
जब तूने इंसानियत की
मर्यादाओं को भी नांग लिया

आवाज़ को उसकी दबा दिया
चीख हो उसकी मिटा दिया
लुट गई सरे बाज़ार आबरू उसकी
गुजरते लोगों ने मुंह मोड़ लिया
गुहार को उसकी अनसुना किया
और उसके साथ हुए इस अपराध का
दोष भी उसी पर लगा दिया

उस दिन वह ईश्वर भी
फैसले पर अपने रोया होगा
कि क्यों मैंने अपनी दुनिया को
इन इंसानों के हवाले किया

अरे खो दिया अस्तित्व उसने
जब तूने इंसानियत की
मर्यादाओं को भी नांग लिया

एक बराबर

हम दोनो एक बराबर है
सिर्फ ये कह देने से
कहाँ है जिंदगी चलती
मेरे बिना कुछ कहे ही
तुम सब कुछ समझ जाओ
कभी ये भी कमी है खलती

अगर कभी काम से फुर्सत मिले
तो तुम भी घर को संभाल लो
और जब बुखार से बदन मेरा जले
तो तुम भी ख्याल मेरा रखो
कल को किसने देखा है
तुम आज को मेरे सवार दो
जो बिखरू मैं कभी कहीं
तो अपनी बाहों में समेट लो
ना करो इंतज़ार मेरे लफ़्ज़ों का
तुम दिल की बातों को भी जान लो
ना करो वादे सात जनमो के
तुम हाथ मेरा आज थाम लो

हम दोनो एक बराबर है
सिर्फ ये कह देने से
कहाँ है जिंदगी चलती
मेरे बिना कुछ कहे ही
तुम सब कुछ समझ जाओ
कभी ये भी कमी है खलती

गुस्सा कभी जो मैं हो जाऊँ
तो तुम भी मुझे मना लिया करो
और इस मकानों भरी दुनिया में
कभी अपने घर को भी सजा लिया करो
पता है तुम बहुत अच्छे इंसान हो
पर कभी अच्छे हमसफ़र का
किरदार भी निभा लिया करो
मत बचाओ थोकरो से मुझे
और ना ही मेरी ढाल बनो
बस थाम कर हाथ मेरा
मुझे अपनी बाराबरी पर खड़ा करो
ना खाओ कसमे साथ जिंदगी बिताने की
बस साथ बिताए लम्हो को खास करो

।।

हम दोनो एक बराबर है
सिर्फ ये कह देने से
कहाँ है जिंदगी चलती
मेरे बिना कुछ कहे ही
तुम सब कुछ समझ जाओ
कभी ये भी कमी है खलती

ओ मेरे आँख के तारे

ओ मेरे आँख के तारे
सुन निंदिया तुझको पुकारे
तुझको आँचल में छुपाए
तेरी मैया ले तेरी बलाए

रात अंधेरी छाने लगी
सपनों में परियाँ
गुन गुनाने लगी
कभी मुस्कुराए
कभी गुद गुदाए
तेरी ही हँसी से
मेरा ये आंगन खिल खिलाए

ओ मेरे आँख के तारे
सुन निंदिया तुझको पुकारे
तुझको आँचल में छुपाए
तेरी मैया ले तेरी बलाए

बाँहों के झूले में
तुझको झुलाऊँ
पालको के बिस्तर में
तुझको सुलाऊँ
कभी दिया-सा जगमगाए
कभी गोदी में सेहम जाए
तेरी ही रोशनी से
मेरा ये घर झिलमिलाए

ओ मेरे आँख के तारे
सुन निंदिया तुझको पुकारे
तुझको आँचल में छुपाए
तेरी मैया ले तेरी बलाए

औरत-I

बेशुमार वफ़ा के बवाजुद भी
उनकी महफिल में मुझे
बेवफा कहलाना है
कौन समझेगा
मेरी इस कश्मकश को
आखिर मुझे बेटी होने का
कर्ज भी तो चुकाना है

भाई की तरह मुझे भी
देर रात घर आना है
पर मैं पगली ये भूल जाती हूँ
कि लोगों को तो बस मेरी परवरिश
पर सवाल उठाना है

इस बराबरी के दौर में भी
बलात्कार का जमाना है
और इस पर भी दिल समाज की
उम्दा सोच पर भर आता है

तभी तो लोगों को मेरे
चाल-चलन को ही
गुनहगार ठहराना है,
इसलिए तो आज़ादी छोड़कर
मुझे अपनी आबरू को
लुटने से बचाना है

खुशी का हक खुदा ने मुझे भी बक्शा
पर मेरा पहला फ़र्ज अपनों की
खुशी में मुस्कुराना है
बेपनाह दर्द से मेरा अलग ही फशाना है
पर इन बे-बाँध आँसुओ को छुपाना
औरत का हुनर पुराना है

औरत-2

कभी माँ, कभी बेटी
तो कभी बहू कहलाती है
वो एक औरत ही तो है
जो इस एक जिंदगी में भी
सारे किरदार बखूबी निभाती है

कभी माँ बनकर
सारे जहान की ममता लूटती है
कभी बहन बनकर
हमारा होसला बढ़ती है
और कभी दोस्त बनकर
जिंदगी जीना सीखती है

वो एक औरत ही तो है
जो इस एक जिंदगी में भी
सारे किरदार बखूबी निभाती है

अपने मासूम से चेहरे के पीछे
ना जाने कितने दर्द छूती है
पर अपनों की खुशी के लिए
चेहरे पर एक अनकही सी
मुस्कान छोड़ जाती है
और किसी के पूछने पर
राज भारी नम आँखो से
सब ठीक है बताती है

वो एक औरत ही तो है
जो इस एक जिंदगी में भी
सारे किरदार बखूबी निभाती है

अपने अंदर समेटे है
एक गहरे तूफान को
पर अपने सभी जस्बातों को
अच्छे से सँभालना जानती है
खुद अंशुलझी सी वो पहेली है
जिसे ईश्वर बेहिसाब कोशिशों के बाद भी
सुलझाने में नाकाम रहा
पर वो जिंदगी और रिश्तों की
हर उलझन को सुलझना जानती है

वो एक औरत ही तो है
जो इस एक जिंदगी में भी
सारे किरदार बखूबी निभाती है

नरम दिल सही पर कमज़ोर नहीं
तभी तो जरूरत पड़ने पर
अपने और अपनों के लिए
वो शस्त्र और आवाज़
दोनो उठाना जानती है
कैसा भी हो कोई भी हो
वो रिश्तों के हर साँचे में
खुद को ढालने का हुनर
बखूबी जानती है

वो एक औरत ही तो है
जो इस एक जिंदगी में भी
सारे किरदार बखूबी निभाती है

कभी ज्ञान रूपी सरस्वती,
कभी शक्ति रूपी दुर्गा है
आदर्श नारी की मिसाल वो

और घर की लक्ष्मी भी वो है
पर समाज के ढेरों काँटे
और अपनी पहचान को गुमसुदगी से
निकालने का बोझ अकेले ही उठाती है

वो एक औरत ही तो है
जो इस एक जिंदगी में भी
सारे किरदार बखूबी निभाती है

कर हर जंग फतह तू

कर हर जंग फतह तू
तुझमें वीरों सी चाहत है

जो मरे इस पावन धरती पर
तू उनकी ही तो विरासत है
तुझमें उन वीरों का खून दौड़ता
जिनमें चट्टानों से हौसले
और तूफानों से इरादे हैं

कर हर जंग फतह तू
तुझमें वीरों सी चाहत है

देश बचाने के खातिर
हर जंग उनकी खिलाफत है
घर से निकले बिना हथियार
मुट्ठी में उनकी ताकत है
नज़रे ना मिला पाया कोई
आँखों में इतनी बगावत है

कर हर जंग फतह तू
तुझमें वीरों सी चाहत है

बंदूख गोलियाँ खिलौने उनके
सीना उनका फौलादी है
खून बहाते मर मिट जाते
वहाँ खिलती कलियों की वादी है
बुरी नजर ना लगाना वतन पर
यहाँ सुर वीरों की आबादी है

कर हर जंग फतह तू
तुझमें वीरों सी चाहत है

करम

ऐसा तूने किया है
मुझपे करम
कर दे तू ही मेरी
धड़कनो पे रहम
तू ही मेरी
ख्वाहिशों का सफर
तुझको ना देखूँ तो
मचले है मेरा मन
मेरी नज़रों को
सपनों से तू भर गया
सुबह तेरी शामे मेरे
नाम पे कर गया
जहाँ रहता हूँ मैं
बस वहीं तू ठहर
लेके आई है तू
ख्वाबों की लहर
जो हो सफर संग तेरे
मंजिल ना मिले
तेरी यादें जहाँ

मैं तो रहता वहाँ
तेरे घर से जो गुज़रे
वो रास्ता है मेरा
मेरे हर एक पल पर
बस हक है तेरा
मेरी सुबह की तू
है पहली रोशनी
मेरी हर रात की
है तू ही चाँदनी
मेरे हर एक जनम में
मुझे तू मिले
मांगता हूँ खुदा से
मैं बस ये दुआ
बेसफ़र था अभी तक
मैं तो यहाँ
तुम मिले तब जाकार
मैं सफर से मिला
बेखबर थे हम
अब तक मोहब्बत से
तुमसे मिल कर
मोहब्बत से रूबरू हुआ
मुरझाए ना अब तक

खिले थे हम
तेरे आने से अब तो
महकते हैं हम
बिन तेरे मेरी साँसें
न चलती सनम
धड़कने भी तेरे बिन
जाती हैं थम
थाम लेना मुझे
जो लड़खड़ाएँ कदम
मेरी बेचैनियाँ अब तो
कर तू खतम
याद तेरी करें
मेरी आँखों को नम
दिल की सरज़मीं पे
तू कर बारिशें
हर दुआ में है शामिल
तेरी ख्वाहिशें
बस तेरे लिए ही लुंगा
मैं हर जनम
अब तेरी तरफ
बढ़ते मेरे कदम

कहाँ है

जो है माँ के आंचल में
जो है पिता के कण-कण में
जो है भाई-बहन की लड़ाइयों में
उनकी छोटी-बड़ी शिकायतों में
वो सुख और सुकून आखिर कहाँ है

जो है त्योहारों की मिठाइयों में
जो है माँ के हाथों के स्वाद में
जो है उसके प्यार में
उसके ममता और दुलार में
वो सुख और सुकून आखिर कहाँ है

जो है पिता की मार में
उसकी चिंता और फटकार में
जो है दादा के लाड़ और दुलार में
जो है दादी माँ की पुचकार में
वो सुख और सुकून आखिर कहाँ है

जो है घर की चार दीवारियों में
जो है आंगन की किलकारियों में
जो है रिश्तों और परिवार में
उसकी एकता और एकसार में
वो सुख और सुकून आखिर कहाँ है

जो है बहनों की डांट में
जो है भाइयों की शरारतों में
उनकी नोक-झोंक और तकरार में
और एक जैसी आदतों में
वो सुख और सुकून आखिर कहाँ है

जो है प्रकृति की गोद में
जो है आकाश की ऊँचाइयों में
जो है समुद्र की गहराइयों में
उन पर्वतों की चढ़ाईयों में
जो है जीवन के छोटे-छोटे पलों में
वो सुख और सुकून आखिर कहाँ है

कुछ झूठ

कुछ झूठ हकीकत से
खूबसूरत होते हैं
तो उन्हें झूठ ही रहने दो
इस उम्मीद पर की
कल वो सच बोलेंगे
आज उन्हें झूठ ही कहने दो

वक़्त तो हम उन्हें
बेहिसाब दे देते
अगर वक्त हमारा
गुलाम होता
और हम वक्त के
मोहताज ना होते
चलो कुछ तुम हमारा ले लो
पर अपना कुछ वक्त तो
हमारे पास भी
रहने दो

कुछ झूठ हकीकत से
खूबसूरत होते हैं
तो उन्हें झूठ ही रहने दो
इस उम्मीद पर की
कल वो सच बोलेंगे
आज उन्हें झूठ ही कहने दो

खुदा कसम
ऐसा भी न था की
हमें तुम पर
ऐतबार नहीं है
पर तुम्हीं कहते थे ना
कि जो रिश्ता
ज़िम्मेदारी बन जाये
वो प्यार नहीं है
चलो ख्वाब ही सही
पर हमें नींद में ही
जिंदा रहने दो

कुछ झूठ हकीकत से
खूबसूरत होते हैं
तो उन्हें झूठ ही रहने दो
इस उम्मीद पर की
कल वो सच बोलेंगे
आज उन्हें झूठ ही कहने दो

कोहिनूर हो गए

खो गए थे हम कहीं
आपको पाकर खुद से
रूबरू हो गए
पहले थे टूटे कांच से
अब कोहिनूर हो गए

पहले थे अधूरे से
अब पूरे से हो गए
पहले थे अंधेरों में
आपके आने से जिंदगी में
सवेरे से हो गए
पहले थे बंजारों से
अब जिंदगी में बसेरे से हो गए

पहले थे टूटे कांच से
अब कोहिनूर हो गए

अकेले यूँ ही खड़े थे हम
अब आपकी यादों की
भीड़ में खो गए
जिंदगी बैराग थी
रातें भी बेचैन थी
आपकी जुल्फों की छाँव में
हम सुकून से सो गए

पहले थे टूटे कांच से
अब कोहिनूर हो गए

कौन हूँ मैं?

जमीन से जुड़ी हूँ
क्योंकि मुझे अपनी
औकात का अंदाज़ा बखूबी है
कभी नदी सी स्थिरता है मुझमें
कभी शीतल तो कभी चंचल हूँ मैं

खूबियों के साथ
तो कुछ कमियों के साथ
कभी राज़ सी गहरी
तो कभी उलझी पहेली सी
तो कभी दर्पण के अक्स सी हूँ मैं

सब से दोस्ती नहीं है मेरी
पर जिनसे है वो घमंड है मेरे
और मोहब्बत वो तो सालों पहले ही
माँ बाप के नाम कर दी थी
लापरवाही में भी मेरी
सबकी परवाह छुपी है

मुस्कुराहटों में ना जाने
कितनी उदासियां छुपी है
और उन उदासियों में
न जाने कितने आँसू
और उन आँसुओ में भी
ना जाने कितनी कहानियाँ

सिर झुकाकर खड़ी हूँ
इसलिए नहीं कि मैं गलत हूँ
बस बड़ों का आदर करती हूँ
कभी सहमी सी हूँ कभी सहती भी हूँ
कभी अंगार हूँ तो कभी नाश हूँ

मैं शांत हूँ पागल नहीं
सुनती हूँ बस कहती नहीं
कभी तेज बारिश सी हूँ
कभी ओस की बूंद हूँ मैं
जो भी हूँ जैसी भी हूँ मैं
हर घर में रहती भी हूँ मैं

कौन हूँ मैं ?

हर शख्स पूँछे ये सवाल

कभी लड़की तो कभी बेटी भी हूँ मैं

कभी औरत तो कभी बहन भी हूँ मैं

कभी ममता तो कभी माँ भी हूँ मैं

क्या है दोस्ती

किसी ने पूछा मुझसे
आखिर क्या है दोस्ती
मैंने भी मुस्कुरा कर कहा --

सुदामा और कृष्ण का प्यार है दोस्ती
ऊँच-नीच, धर्म और जात से
पृथक हो जो रिश्ता
ऐसे जीवन का सार है दोस्ती

जहाँ शोर में भी सुकून हो
ऐसे मधुर संगीत का राग है दोस्ती
जहाँ हार कर भी जीत हो
ऐसी प्रतियोगिता का इतिहास है दोस्ती

जो मुश्किलों में साथ खड़ा रहे
ऐसी यारी का सौभाग्य है दोस्ती
जो रिश्ते-नातों से परे हो
ऐसे बेनाम रिश्ते का नाम है दोस्ती

जहाँ हँसने का कोई कारण ना हो
ऐसी मुस्कुराहटों का राज़ है दोस्ती
जहाँ बद-गुमानी की जगह ना हो
ऐसे रिश्ते का गुमान है दोस्ती

अंत में एक शेर अर्ज करती हूँ-

दोस्तों से दूर रहना
इतना भी आसान नहीं होता
वो रहता है दोस्तों से दूर
जो दोस्ती का कदरदान नहीं होता
छोटी-छोटी गलत फ़हमियों से
नहीं टूटती दोस्ती
ए दुनिया वालों, दोस्ती निभाने वाला
यूँ ही इतना महान नहीं होता

गुलजार हैं

जन्म दो जन्म का नहीं
कई जनमो का तू हमराज है
साँसों की सरजमीं पर मेरी
ख़ुशबूओं की तू बरसात है
तू जो है मेरे साथ तो
ख़ुशियाँ बेशुमार है

इस कदर मेरी जिंदगी पर
तेरा एहसान है की
मोहब्बत भी मोहब्बत से गुलजार है

तुझको ही ढूँढा मैंने
मेरी हर तन्हाई में
रातों को रोया मैं
तेरी हर जुदाई में
ख़ुशियाँ थी नाराज़ जो
वो भी मुस्कुराने लगीं
धड़कने थी दिल में मेरे
पर जरूरत वो तुझे बनाने लगीं

इस कदर मेरी धड़कनो पर
तेरा एहसान है की
मोहब्बत भी मोहब्बत से गुलजार है

जिंदगी की रफ़्तार

जिंदगी की रफ़्तार में
मेरे कई यार छूटे
कुछ नये तो कुछ पुराने
मेरे कई ख्वाब टूटे

पहले जिंदगी बीत गई
नाम और पैसा कमाने में
फिर बची कुछ बीत गई
रिश्ते और जिम्मेदारियाँ निभाने में
कुछ खुद को संभालने में
और कुछ दूसरों को समझाने में
तो कभी अपनों और परायों को पहचानने में
जो कुछ पल बचे पास मेरे
वो भी बीत गए
जिंदगी की उलझनों को सुलझाने में
उलझने से सुलझी नहीं
पर कुछ अपने जरूर रूठे
कुछ साथ खड़े रहे
तो कई निकले झूठे

जिंदगी की रफ़्तार में
मेरे कई यार छूटे
कुछ नये तो कुछ पुराने
मेरे कई ख्वाब टूटे

जब भाग रहे थे आगे बढ़ने को
तब खुद का ही होश ना था
जब रुक कर पीछे देखा तो
वो पहले जैसा अब जोश ना था
जो छूट गया पीछे जिंदगी में
अब ऐसा भी ना कहेंगे की
दिल में उसका अफ़सोस ना था
पर अब अफ़सोस करने का वक़्त कहा
और कमबख्त कुछ कर सके
ऐसा अब शरीर ना था
वक्त को समेटने में
जिंदगी से कुछ पल यूं लूटे
जिंदगी का तो कोई दोष भी ना था
फिर हम सारी उमर जिंदगी से रूठे
जिंदगी की रफ़्तार में

मेरे कई यार छूटे
कुछ नये तो कुछ पुराने
मेरे कई ख्वाब टूटे

जो बीत गई

जो बीत गई है बात कभी
चलो उसे बीत जाने दो
अनजानी सी इन राहों में
जिंदगी के कुछ ठिकाने दो

पर्वत भी ये शीश झुकाए
हौसलों से उसे झुकाने दो
ना बहता चला जा नदियों सा
कुछ पल ठहर और जीवन में
समुद्र की गहराई भी लाने दो

जो बीत गई है बात कभी
चलो उसे बीत जाने दो
अनजानी सी इन राहों में
जिंदगी के कुछ ठिकाने दो

टूटते तारे की आस में
इस तारों भरे आकाश में

चलो एक रात यूँ ही बीत जाने दो
मुरझाई उन कलियों को
आज फिर से तुम खिल-खिलाने दो

जो बीत गई है बात कभी
चलो उसे बीत जाने दो
अनजानी सी इन राहों में
जिंदगी के कुछ ठिकाने दो

चल बैठकर मधुबन में कभी
चिड़ियों को शोर मचाने दो
तितलियाँ आज फिर इठलाई
इन भँवरों को भी गुनगुनाने दो
इस उदासी भरी जिंदगी में
खुशियों की लहर भी आने दो

जो बीत गई है बात कभी
चलो उसे बीत जाने दो
अनजानी सी इन राहों में
जिंदगी के कुछ ठिकाने दो

तुम हो

मेरी हर एक साँस तुम हो
इन लबों पर बात तुम हो
जो रहा खामोश अब तक
उस दिल की आवाज़ तुम हो

कल तो साँस भी ना थी
आज तो हर एहसास तुम हो
कुछ भूला सा याद आया है
उन यादों में साथ तुम हो
भीड़ में भी बेशोर था
अब खामोशियो में आवाज तुम हो
तन्हाइयो से मेरा नाता टूटा
जब से दिल की गहराइयो तुम हो

मेरी हर एक साँस तुम हो
इन लबों पर बात तुम हो
जो रहा खामोश अब तक
उस दिल की आवाज़ तुम हो

रूठना मनाना कहाँ आता था मुझे
आज मेरी हर ज़िद में तुम हो
ख्वाबो से बेखबर मैं था
अब तो हर ख्वाहिश में तुम हो
खुदा तो बस नाम का था
अब खुदा के हर अक्स में तुम हो
ना अर्ज़िया थी ना ही कोई मन्नतें
अब हर दुआ का आगाज़ तुम हो

मेरी हर एक साँस तुम हो
इन लबों पर बात तुम हो
जो रहा खामोश अब तक
उस दिल की आवाज़ तुम हो

बंजारो सा जो भटक रहा था
उस मुसाफिर की राह तुम हो
खो दिया मैंने खुदको यूँ तुझमें
अब मेरी पहचान तुम हो
ख़ुशियाँ थी जो नाराज़ अब तक
अब हर हँसी का राज तुम हो
इस बंजर दिल की ज़मी पे मेरे
एहसासो की बरसात तुम हो

मेरी हर एक साँस तुम हो
इन लबों पर बात तुम हो
जो रहा खामोश अब तक
उस दिल की आवाज़ तुम हो

तेरा याराना

वो गलती में मेरी
साथ मेरे खड़े हो जाना
और कभी अपनी भी
गलतियों की डांट मुझे खिलाना

आज फिर सालों बाद
याद आया है तेरा याराना

वो मेरे बिन कुछ कहे ही
तेरा सब कुछ समझ जाना
और कभी लाख कोशिशों के बाद भी
तेरा मेरी बातों को अनसुना कर जाना

आज फिर सालों बाद
याद आया है तेरा याराना

वो औरों के टिफिन चुराना
और फिर साथ मिलकर खाना

वह होमवर्क ना करके जाना
फिर तेरा मेरा एक जैसा बहाना

आज फिर सालों बाद
याद आया है तेरा याराना

वो मेरी माँ के आंचल में
तेरा आकर मुझसे छुप जाना
वो पिता की फटकार से
मुझे, तेरा यूँ बचाना

आज फिर सालों बाद
याद आया है तेरा याराना

वो छोटी बड़ी शरारतों में
हमारा यूँ बड़े हो जाना
फिर जरूरतों और जिम्मेदारियों में
हमारा यूँ ही बिछड़ जाना

आज फिर सालों बाद
याद आया है तेरा याराना

तेरी चाहतों से

भीड़ में भी तन्हा मैं रहा
तेरी यादों ने जिंदा रखा
जिसकी थी आदत मुझे
उसने ही नाता तोड़ लिया
अब कहाँ जाऊँ मैं
यू भटकना भी आसान नहीं
मुसाफिरों की तो राहें हैं
मेरी तो मंजिल का ही पता नहीं

महफ़िल है चाँद तारों की
पर नूर कुछ और है
चाहत है मोहोब्बत की
पर किस्मत को
मंज़ूर कुछ और है
दुआ है तेरे साथ की
पर खुदा को
क़ुबूल कुछ और है

कहना है बहुत कुछ
पर ज़ुबाँ ख़ामोश है
नींद है कि आती नहीं
ख़्वाब है कि जाते नहीं
दिल में एक शोर है
फिर भी लफ़्ज़ों में ख़ामोशी है
आँसुओं को रोक रहे हैं
झूठी मुस्कुराहटों से
फिर भी आँख नम है
तेरी चाहतों से

तो धूप भी मिलेगी

जब तय ही कर लिया सफ़र
तो धूप भी मिलेगी
तू ही बाहर इससे निकल
ये भीड़ ना कभी रुकेगी

तू तैर कर इसे पार कर
समुद्र है, तो लहरें भी उठेंगी
सुबह का ना तू इंतजार कर
अभी रात है, कल नई किरण उगेगी

जब तय ही कर लिया सफ़र
तो धूप भी मिलेगी

आज तूफानों में घिरी है
कल जीत की कश्ती मिलेगी
हालात ना बदलेगा ईश्वर
तू खुद ही इसके सांचे में ढलेगी

जब तय ही कर लिया सफ़र
तो धूप भी मिलेगी

अब राह ना बदलेगी तेरी
मंजिल की अगर चाह है
और लंबा तेरा रास्ता है
तो फिर तू खुद ही बदलेगी

जब तय ही कर लिया सफ़र
तो धूप भी मिलेगी

आकाश ऊँचा है सदा से
बिन पंख पसारे, बिन गिरकर हारे
तो फिर ऊँची उड़ान कैसे उड़ेगी
उम्मीद हार अगर बैठ जाएगी
तुम मंजिल फिर कैसे मिलेगी

जब तय ही कर लिया सफ़र
तो धूप भी मिलेगी

रिवायतों की तलाश में
रिवाजों से क्यों हताश है
आज दायरों में जो सिमट गई
तो कल समाज से कैसे लड़ेगी

जब तय ही कर लिया सफ़र
तो धूप भी मिलेगी

दर्द-ए-दिल

दर्द-ए-दिल हमको न होता
जो तू ना, बेवफा मैं होता
मेरा दिल इतना भी ना रोता
जो तू ना, बेवफा मैं होता

हाथो में मेरे
हाथ हैं तेरे
फिर क्यों तू ना
लक्कीरों में मेरे
यादों में मेरी है
वो हसीन मुलाकातें
लफ़्ज़ों में ठहरी हैं
आकार तेरी बातें

दर्द-ए-दिल हमको न होता
जो तू ना, बेवफा मैं होता
मेरा दिल इतना भी ना रोता
जो तू ना, बेवफा मैं होता

कस्मो में है तू
रस्मो में भी तू
फिर क्यों तू ना
किस्मतों में मेरी
मोहब्बत में तेरी
खुद को यूं कैद किया
लो मेरे दिल ने भी
मुझसे ही बैर किया

दर्द-ए-दिल हमको न होता
जो तू ना, बेवफा मैं होता
मेरा दिल इतना भी ना रोता
जो तू ना, बेवफा मैं होता

दिल को लगी है
आदतें तेरी
क्यों ये ना समझे
तू अब ना मेरी
आके कभी तू
लग जा गले से
अब तो बस यही आखिरी
ख्वाहिश है मेरी

दर्द-ए-दिल हमको न होता
जो तू ना, बेवफा मैं होता
मेरा दिल इतना भी ना रोता
जो तू ना, बेवफा मैं होता

नदी और नालों का

नदी और नालों का
अंतर और अर्थ बदला
तेरी गंदगी में घुल जाने से

तू साफ तन लिए घूम रहा है
ना स्वस्थ तन के तेरे ठिकाने हैं
मलिन मन तेरा हो गया है
और भी मलीन हो रही हूँ मैं
तेरी मलीनता छुपाने से

नदी और नालों का
अंतर और अर्थ बदला
तेरी गंदगी में घुल जाने से

अस्तित्व मेरा खो रहा है
तेरा यूँ बेवजह मुझे बहाने से
तू आँख बंद कर सो रहा है
मैं पल-पल कल-कल बहती रही

और समुद्र में विलीन हो गई
यूँ ही मेरे ठिकानों से

नदी और नालों का
अंतर और अर्थ बदला
तेरी गंदगी में घुल जाने से

कल तक जो निर्मल थी
आज वो कठोर हो गई
तेरी क्रूरता सह जाने से
मैं नीर थी, मैं नीर से भरी थी
अब निर्जल हो गई हूँ
तेरे पापा को छुपाने से

नदी और नालों का
अंतर और अर्थ बदला
तेरी गंदगी में घुल जाने से

तू कल जीवन को तड़पेगा
इस अमृत पान को तरसेगा
फिर गुहार तू लगाएगा

अपने काल से मिल जाएगा
पर ना मिलूंगी मैं तेरे बुलाने से
जब ना रहूंगी मैं यहाँ
तो क्या होगा तेरे पछताने से

नदी और नालों का
अंतर और अर्थ बदला
तेरी गंदगी में घुल जाने से

नन्हीं सी जान

तेरी प्यारी सी मुस्कान
प्यारी सी भोली सी मुस्कान
तू तो है नन्हीं सी जान
सारी दुनिया से अनजान

माँ के आंचल में सिमटी
तेरी तो दुनिया सारी
पिता है तेरा वह साया
जिससे धूप बारिश हारी
तू है वो कली है मेरे आंगन की
जिससे महकी गल्लियाँ चौबारी

तेरी प्यारी सी मुस्कान
प्यारी सी भोली सी मुस्कान
तू तो है नन्हीं सी जान
सारी दुनिया से अनजान

तेरे नन्हे कदमों की आहट
जैसे भरी गर्मी में राहत
तू जो बोले लगे कोयल
सावन संग मधुर रस घोले

तेरी प्यारी सी मुस्कान
प्यारी सी भोली सी मुस्कान
तू तो है नन्हीं सी जान
सारी दुनिया से अनजान

पत्थर को भी फूल बना दे
तेरी प्यारी सी मुस्कान
आंखों में नदियां बसी सारी
डूब ना जाए यह संसार

तेरी प्यारी सी मुस्कान
प्यारी सी भोली सी मुस्कान
तू तो है नन्हीं सी जान
सारी दुनिया से अनजान

पिता और बचपन

शौक तो पिता की
कमाई में ही पूरे होते थे
अपनी कमाई में तो सिर्फ
जरूरतें और जिम्मेदारियाँ ही पूरी होती हैं
घड़ी खरीद कर बांध तो ली
मगर वक्त पीछे छूट गया
एक वक्त वो भी था
जब पिता से ख्वाहिशें कहना
और अपनी ही मौज में रहना
बस यही दो जरूरी काम थे
और अब जरूरतें ही पूरी नहीं होती
ऐब भी था फरेब भी था
पर पिता का खौफ भी था
आज ना तो पिता का खौफ है
और ना ही ऐब और फरेब
फिर भी यह जिंदगी
उलझी सी लगती है
बचपन में सफर का शौक था

और आज परिवार की जरूरतों ने
सच में मुसाफिर बना दिया
वो सुकून वो खर्चों से बेफिक्र बचपन
आज फिर से याद आता है
जिंदगी की इस भाग-दौड़ में
बचपन कहीं खो सा जाता है
पिता के साथ में पूरा दिन
हंसते खेलते गुज़र जाता था
और अब बिना मुस्कुराए ही
पूरा दिन गुज़र जाता है
एक वक्त था जब ना तो
समय की कोई सीमा थी
और ना ही खेलकूद का कोई वक्त
कितने दूर चले आए हम
जिम्मेदारियाँ निभाते-निभाते
कई रिश्तों से दूर हो गए
हम खुद को पाते-पाते
लोग पूछते हैं राज़ हमारी खुशी का
और हम भी थक गए
नम आँखों को छुपाते-छुपाते
वो एक बचपन का दौर था

जब पूरी दुनिया बदलना चाहते थे
आज खुद को ही बदलने का
समय नहीं है हमारे पास
जब हाथों में वक्त था
तब मैं उसके हिसाब से ना चला
और अब जब मैं वक्त के
हिसाब से चल रहा हूँ
तो वक्त ही चला गया
पिता ने लोगों की पहचान
उनके दिल से करना सिखाई
और ईमान से परखना बताई
पर सभी लोगों ने
चेहरे से कीमत लगाई
और कपड़ों से औकात बताई
पैसों से सुख कोई
खरीद नहीं सकता
और पिता से बड़ा
दुख का कोई
खरीदार नहीं होता

प्रकृति को जान ले

बदल गई यह पावन हवा
प्रदूषणों को फैलाने से
रुक जा अभी भी समय है
बचाले अस्तित्व को अपने
इस मिट्टी में मिल जाने से
अपनी दृष्टि को सृष्टि में विलीन कर
और इस प्रकृति को जान ले

कुछ इस तरह जिंदगी से अपनी
गमों के पल तू छाँट ले
कुछ पल खुशी के यूँ अपने
तू भी प्रकृति से बाँट लें

खोल कर बाहें कभी अपनी
इस हवा को भी तू थाम ले
उठा नज़र तू भी कभी
और प्रकृति से जीने का राग ले
जो बहके कभी मन तेरा

तू दो पल ठहर कर
इस मन को भी कभी डाँट ले

कुछ इस तरह ज़िंदगी से अपनी
गमों के पल तू छाँट ले
कुछ पल खुशी के यूँ अपने
तू भी प्रकृति से बाँट लें

वनों की इन गहराइयों में
ज़िन्दगी से कुछ फ़साने ले
डूब जा तू कुछ यूँ
प्रकृति के इस माया जाल में
की बंद कर पलकें अपनी
और लेट कर गोद में इसकी
तू भी सुकून की साँस ले

कुछ इस तरह ज़िंदगी से अपनी
गमों के पल तू छाँट ले
कुछ पल खुशी के यूँ अपने
तू भी प्रकृति से बाँट लें

फूलों की इन खुशबुओ में
तितलियों को तू इठलाने दे
आकाश से रूठे परिंदों को
तू आज पंख फैलाने दे
रोक ना तू इन होठों को
चल आज फिर से बेवजह यूँ ही
तू खुद को मुस्कुराने दे

कुछ इस तरह जिंदगी से अपनी
गमों के पल तू छाँट ले
कुछ पल खुशी के यूँ अपने
तू भी प्रकृति से बाँट लें

बता दे खुदा

जा नाम तेरा महफ़िलों में
बदनाम न करेंगे
पर याद रखना भुलकर भी
फिर किसी से प्यार न करेंगे

बता दे खुदा क्यों इतना सताया
जो जी कर भी मरते हैं
पहले हस्साया और फिर इतना रुलाया
लो अब तो गम भी मुझपे ही हस्से

तेरी हसरतो की चाहत में
अपनी भी खुशी गावा बैठे
तू तो आया न सनम
पर दर पर तेरे
हम तो दस्तके लगा बैठे
अब तो जिंदगी पर भी
हम एतबार ना करेंगे

बता दे खुदा क्यों इतना सताया
जो जी कर भी मरते हैं
पहले हस्साया और फिर इतना रुलाया
लो अब तो गम भी मुझपे ही हस्से

तेरी यादो में
खामोशियो से दिल लगा बैठे
इश्क को सुलझते-सुलझते
हम खुद को ही उल्झा बैठे
अब तो मोट आने का इंतजार है
वरना जिंदगी जीना और मुस्कुराना
तो हम कब का ही भुला बैठे

बता दे खुदा क्यों इतना सताया
जो जी कर भी मरते हैं
पहले हस्साया और फिर इतना रुलाया
लो अब तो गम भी मुझपे ही हस्से

बदल गया

दिल की बातें क्यों ना समझे
क्यों ना समझे दर्द मेरा
मौसम भी ना बदले यारा
तू पल भर में बदल गया

तू कहता था मेरे साथ चलेगा
जैसी नदिया और किनारा
फिर क्यों बिछड़ गया
इस आकाश से तारा
रो रो के दिन तो बीत गए
रातों ने भी ख्वाबो को बिगाड़ा
तू ही कल था तू ही अब है
तू ही मेरा पहला रब है

दिल की बातें क्यों ना समझे
क्यों ना समझे दर्द मेरा
मौसम भी ना बदले यारा
तू पल भर में बदल गया

तू कहता था मुझे दिल की राहत
जैसा खुदा कोई करे इबादत
फिर क्यों जुदा हुई
मुझसे मेरी चाहत
तू दूर जाती रही मुझसे
और मैं तरस गया
सुनने को तेरी आहट
तू ही सजदा है तू ही हसरत है
तू ही तो मेरा पहला मजहब है

दिल की बातें क्यों ना समझे
क्यों ना समझे दर्द मेरा
मौसम भी ना बदले यारा
तू पल भर में बदल गया

बदली है

बदली है अदाएं उनकी
बदले अंदाज़ है
और बदला-बदला सा
उनका मिजाज है
फिर भी उनकी आँखों में
वो पहले जैसा प्यार है

इतने सालो बाद मिला है
फिर भी वो नाराज़ है
चोरी-चोरी नज़रे देखे
पर लवजो मे इंकार है
साँसें है थम गई
और दिल बेकरार है
बस रब को खबर मेरे
मेरा क्या हाल है

बदली है अदाएं उनकी
बदले अंदाज़ है

और बदला-बदला सा
उनका मिजाज है
फिर भी उनकी आँखों में
वो पहले जैसा प्यार है

सूरत तो ठीक है
पर सीरत कमाल है
नूर चाँद सा उसका
और वो भी बेमिसाल है
सादगी पर उसकी मुझको
बहुत ही गुमान है
मैं तो हू राजी पर
ना जाने उसका क्या ख्याल है

बदली है अदाएं उनकी
बदले अंदाज़ है
और बदला-बदला सा
उनका मिजाज है
फिर भी उनकी आँखों में
वो पहले जैसा प्यार है

बाप-बेटी का रिश्ता

तू जब-जब साथ में रहती है
बंधने लगती है आस
तेरा रोना है बरसात
तेरा हँसना है आकाश
क्यों थम जाती हैं
हर साँस मेरी
जब-जब होती तू उदास

शायद इसीलिए होता है
बाप-बेटी का रिश्ता
इतना ज्यादा खास

मेरे लिए वह खुशी है
जो तेरे होठों पर हँसी है
अब तुझसे है मेरा सवेरा
तेरी नींदों से मेरी रात है
मेरे आंगन में दौड़ते
नन्हे पग अब बड़े हो गए
यह सोचकर मन है उदास

शायद इसीलिए होता है
बाप-बेटी का रिश्ता
इतना ज्यादा खास

मंज़र

रोज़ मंजिल की चाहत में
खुद को यूँ जलाया है
जबसे भटकना छोड़कर
खुद का नया मंज़र बनाया है

आदते आँधियों से लड़ना
शौक है तूफ़ानो से भिड़ना
रोकना जो खुदा भी चाहे
उसको भी पड़ जाएगा झुकना,
ख्वाब को करने मुकम्मल
अँधेरी रातों में हैं जागे
रोशिनी जो ना मिली तो
ख्वाहिशों के चिरागो के पीछे भागे,

रोज़ मंजिल की चाहत में
खुद को यूँ जलाया है
जबसे भटकना छोड़कर
खुद का नया मंज़र बनाया है

राह आसान ना मिली तो
मुश्किलो का हाथ थमा है
तकदीरो और लकीरो में जो ना था
हौसलों से उसको भी मुमकिन बनाया है,
कल तक हँसते थे लोग हम पे
आज तालियों का शोर है
कल तक भीड़ का हिस्साथे हम
आज भीड़ में भी हम पर ही गौर है,

रोज़ मंजिल की चाहत में
खुद को यूँ जलाया है
जबसे भटकना छोड़कर
खुद का नया मंज़र बनाया है

माँ

चाँद की तश्तरी में मोहब्बत परोसी है
फलक को भी जमीनों पर उतारा है
इबादत को दुआओ से सजाया है
वह भी क्या वक्त होगा
जिस वक्त में माँ
खुदा ने आपको बनाया है

ममता से तू छलक रही है
आंचल को भी तूने
सुकून से सजाया है
आँखों में तेरे तारे झिलमिलाए
जब जब तूने मुझे
ममता से निहारा है

वह भी क्या वक्त होगा
जिस वक्त में माँ
खुदा ने आपको बनाया है

कोयल के भी सुर फीके पड़े
जिस घड़ी तूने मुझे
प्यार से पुकारा है
और तेरी मीठी-मीठी लोरियों से
मेरा बचपन मुस्कुराया है

वह भी क्या वक्त होगा
जिस वक्त में माँ
खुदा ने आपको बनाया है

मेरा पेट भरने को माँ
मैंने भी तुझे खूब दौड़ाया है
दौड़ना तो सिर्फ बहाना है
मुझे तो तेरी मधुर
पायल और चूड़ियों के
संगीत ने रिझाया है

वह भी क्या वक्त होगा
जिस वक्त में माँ
खुदा ने आपको बनाया है

तेरा बात-बात पर ठोकना
गलतियाँ करने से रोकना
आज फिर से याद आया है
अगर पिता दीपक है
तो तू उसकी रोशनी
अगर पिता पेड़ है
तो तू उसकी शीतल छाया है

वह भी क्या वक्त होगा
जिस वक्त में माँ
खुदा ने आपको बनाया है

स्कूल ने तो बाद में
पहले तूने दुनियादारी का
पाठ मुझे पढ़ाया है
तेरे आंचल के सामने
यह दुनिया कितनी छोटी है
खुद के लिए समय नहीं
पर अपने हर रिश्ते को तू
प्यार से संभालती-संजोती है

वह भी क्या वक्त होगा
जिस वक्त में माँ
खुदा ने आपको बनाया है

माफ किया

जा तुझे माफ किया
दिल में दाखिल होकर
इस दिल को ही तोड़ने वाले
मेरी फरियाद, मेरी हसरतो से
मुह मोड़ने वाले

तुझको हर अक्ष की
छाँव में देखती हूँ
फिर क्यों हर आइना खफा है
वफ़ा से ही मेरी
जिंदगी तेरी मोहब्बत से खोफसदा
सब कुछ मेरा उस खुदा के हवाले

जा तुझे माफ किया
दिल में दाखिल होकर
इस दिल को ही तोड़ने वाले
मेरी फरियाद, मेरी हसरतो से
मुह मोड़ने वाले

इबादत हुई खफा मेरी
खुदाया इस डर पे तेरे
रूसवा तुम हो गए सनम
ख्वाब से कैसे रूक्सत करे हम
इश्क पर एतबार न कर पाएंगे
रास्तों पर हाथ छोड़ने वाले

जा तुझे माफ किया
दिल में दाखिल होकर
इस दिल को ही तोड़ने वाले
मेरी फरियाद, मेरी हसरतो से
मुह मोड़ने वाले

मिट्टी से जन्मा हूँ मैं

मिट्टी से जन्मा हूँ मैं
तू मुझे मिट्टी में मिल जाने दे
क्या करूंगा आकाश में उड़कर
तू मुझे मिट्टी से जुड़ जाने दे

ऊँचे-ऊँचे मकानों के बीच
तू मुझे मेरा घर बनाने दे
इस जानवरों की बस्ती में
तू एक इंसान का बसेरा बसाने दे
इस वक्त पर चलने वाली दुनिया को
वक्त को जीना सिखाने दे

मिट्टी से जन्मा हूँ मैं
तू मुझे मिट्टी में मिल जाने दे

प्रतियोगिता की इस दुनिया में
इंसानियत को जितवाने दे
बेईमानी के जमाने में

ईमान का अक्स दिखाने दे
भागदौड़ और शोरगुल में
जिंदगी से कुछ पल चुराने दे

मिट्टी से जन्मा हूँ मैं
तू मुझे मिट्टी में मिल जाने दे

महंगाई की इस चकाचौंध में
सादगी के कुछ नज़राने दे
खूबसूरती तो ढल जाएगी
तू दिलवालों के ठिकाने दे
महंगी घड़ी बांधने वालों को
समय का महत्व समझाने दे

मिट्टी से जन्मा हूँ मैं
तू मुझे मिट्टी में मिल जाने दे

पुराने तो बहुत है
तू कुछ नए रिश्ते बनाने दे
गलतियों पर साथ नहीं, डांट दे
कुछ ऐसे यारों के याराने दे

जो लोगों से ना, प्यार से बना हो
ऐसे परिवार की नींव रखवाने दे

मिट्टी से जन्मा हूँ मैं
तू मुझे मिट्टी में मिल जाने दे

चलते-चलते थक गया हूँ
कुछ पल तो ठहर जाने दे
जिंदगी तो पूरी बीत गई है
अब खुद को तसल्ली भरे बहाने दे
अब तो आज़माइश की बारी है
चल मुझे भी कुछ रिश्ते आज़माने दे

मिट्टी से जन्मा हूँ मैं
तू मुझे मिट्टी में मिल जाने दे

मिला तू मुझे

दिल की किताब में
देखा तुझे ख्वाबों में
मांगा है दुआओं में
ढूंढा सौ जहानों में
तो मिला तू मुझे

लड़के खुदा से मैं
आया बस तेरे लिए
लिखीं सौ कहानियाँ
सब में ज़िक्र तेरा किया
खो गई भीड़ में दो जिन्दगानियाँ
तो मिला तू मुझे

बातें जब कभी हुई
मैंने नाम तेरा लिया
मोहब्बत की कैद में
मिलीं क्यों रिहाइयाँ
तू प्यार है तू ही तन्हाइयाँ
तो मिला तू मुझे

क्या मैं नाम दूं
मेरे इस प्यार को
तेरा जुनून क्यों
सर पे चढ़ा मेरे
तू है तलब तू ही मेरा नशा
तो मिला तू मुझे

तू ही है जिद्द मेरी
तू ही है ख्वाहिशें
राहें तो कई मिली
मंजिल पर तू ही खड़ा
कहाँ नहीं ढूंढा तुझे
तू मिला बस यहीं
तो मिला तू मुझे

मैं वो कहानी हूँ

पापा की गुड़िया हूँ
आंगन की चिड़िया हूँ
उड़ जाऊँगी एक दिन
मैं वो कहानी हूँ

मम्मी की बिटिया हूँ
जादू की पुड़िया हूँ
यह जादू चला जाएगा एक दिन
मैं वो कहानी हूँ

बहना के आँसू
नदिया का पानी हूँ
बह जाऊँगी एक दिन
मैं वो कहानी हूँ

भैया की राखी हूँ
शोभा कलाई की हूँ
खो जाऊँगी एक दिन
मैं वो कहानी हूँ

बाबा की लाडो
अम्मा की रानी हूँ
चली जाऊँगी एक दिन
मैं वो कहानी हूँ

मायके की इज्जत हूँ
ससुराल का सम्मान हूँ
दोनों के साथ चलना है एक दिन
मैं वो कहानी हूँ

मायके का ख्वाब हूँ
ससुराल की लाज हूँ
दोनों को महकाऊँगी एक दिन
मैं वो कहानी हूँ

खुद को ही बयाँ कर रही
खुद से ही बयाँ कर रही
एक बेटी की जुबानी हूँ
एक बेटी की कहानी हूँ

मैं हारा नहीं

मैं हारा नहीं,
बस थोड़ा सा
थक गया हूँ
मैं ठहरा नहीं,
बस थोड़ा सा
बहक गया हूँ
कांच समझ पत्थर न मार
जिंदगी में इतनी
ठोकर खाई है मैंने
की मैं खुद ही
पहाड़ बन गया हूँ
कल डूबते सूरज का अक्स
जरूर था मैं
पर आज नई सुबह सा
फिर उम्मीदों से
झलक रहा हूँ मैं
नीचे गिरने से
डरा ही कब था मैं

अभी तो और भी ऊँची
उड़ान भरनी है मुझे
हार मान लू मैं
ये फ़ितरत में नहीं मेरी
वरना गिर कर चोट तो
सालों से खा रहा हूँ मैं
आग भले ही ना बची हो
पर अंदर चिंगारी तो
अभी भी जल रही है
तू पानी डाल कर
क्या बुझाएगा इसे
यहाँ सालों से रोज़ ही
बारिशो में भीग रहा हूँ मैं
अभी तो उड़ान की शुरुआत है
ऊँचाइयों को नापना तो
कबका छोड़ दिया मैंने
क्योंकि गिर कर बैठ जाने वाले
मंज़िलो के फैसले नहीं किया करते
और जो उठकर फिर चल दे
वो सफर का फासला नहीं गिना करते

मौत

वक़्त ने भी क्या खूब सिखाया है
जिंदगी तो कभी अपनी थी ही नहीं
मौत ने अपनाया है
बेवज़ह ही मैं
जिंदगी को अपना माने बैठा था
मौत ने मुझे जिंदगी का
सही मतलब समझाया है

बेवज़ह अँधेरे को कोसने वालों
ज़रा बताओ तो बिना अँधेरे के
रोशनी का वजूद ही क्या है
जलने वाला बेचारा जलता रहा
और लोग दीये को लिए चलते रहें
रुई और तेल ने अपना
अस्तित्व मिटा दिया
रोशनी को तामीर करने में
और हम भी दीये को
रोशनी का श्रेय देते रहे

अभी जी रहा है तो जी ले खुलकर
ये जिंदगी है जनाब
फिर ना जाने
तू कितनी मौत मरेगा
भला मौत को क्यूँ ही दोष दू
ज़ालिम तो जिंदगी होती है
मौत तो बस एक बार जान लेती है
जिंदगी तो हर रोज
एक नया जख्म देती है

दर्द ही हमदर्द बन जाए
इतना दर्द संजोना नहीं
जख्म जो ना भरे तेरे
तो उन्हें बैठकर सीना कभी
जिंदगी ने आँसू दिए
तो कभी सपना दिया
मौत ने बंद की पलकें
और सुकु भरी एक गहरी नींद में
दोनों आँखों को सुला दिया
जिंदगी ज़ालिम तकलीफ़ देती रही
और मौत ने जख्मो से फन्ना किया

जिंदगी ने बंद किया अपना दरवाज़ा

और हाथ छोड़कर मेरा

मुँह भी अपना मोड़ लिया

कुछ ग़ैरों ने तो कुछ अपनों ने

मेरी लाश को चार कंधों का

सहारा भी दिया

पूँछा ना जिन्होंने जीतेजी

मेरा हाल कभी

उन्होंने ने भी कुछ आँसुओ को

मेरी कब्र पर बहा लिया

जिंदगी ने जब खुद से

रूसवा किया मुझे

तब मौत ने बाहें खोलकर

मुझे गले से लगा लिया

याद करो

उनको भी कुछ पल याद करो
जिन्होंने दी कुर्बानियां
तेरे वतन के लिए

उनको भी कुछ पल याद करो
जिन्होंने त्यागी अपनी माँ
सिर्फ भारत माँ के लिए

छोड़ी उन्होंने अपनी बहने
तेरी बहनों की रक्षा के लिए
लड़ते हैं सुनी कलाई लेकर
सिर्फ वतन को दी कसम के लिए

छोड़ खेत खलिहान हरे
लड़ रहे सीमा पर खड़े
भरी आँखों में नींद जिनके
फिर भी दिल में और होठों में
भारत माँ है उसके

कभी पीठ न दिखाते जो
सीने पर गोली खाते जो
बम बारूद है पटाखे उनके
माथे पर बाँधे कफन वतन के लिए

वो ही बातें तेरी

वो ही बातें तेरी
वो ही सवाल है
और वो ही तो
तेरा ख्याल है
बस बदले जो
वो तेरे जवाब है

आँखों में नूर वही था
चेहरे पर गुस्सर वही था
कदमों में नज़ाकत वही थी
होठों में मुस्कुराहट वही थी
कुछ नहीं बदला तुझमे
सब कुछ वही था
बस तेरे देखने का
वो अंदाज़ नहीं था

वो ही बातें तेरी
वो ही सवाल है

और वो ही तो
तेरा ख्याल है
बस बदले जो
वो तेरे जवाब है

सच-सच क्यों
तू ना कहता है
बग़ैर हथियार ही,
जान मेरी लेता है
कभी तो पूछ आकर
मेरा भी क्या हाल है
जिससे निकल ना पाया कभी
वो तेरा ही तो जाल है

वो ही बातें तेरी
वो ही सवाल है
और वो ही तो
तेरा ख्याल है
बस बदले जो
वो तेरे जवाब है

नूर तेरा रब से ज्यादा
आँखों में मेरे है
तू सज-संवर कर बैठा
हम तेरी सादगी पे ठहरे हैं
आधी-आधी रात को
दिल घुट-घुट रोया है
जबसे तेरी आँखों ने
किसी और को संजोया है

वो ही बातें तेरी
वो ही सवाल है
और वो ही तो
तेरा ख्याल है
बस बदले जो
वो तेरे जवाब है

शहीद

एक नन्हीं किलकारी गूँछे
फिर एक सवाल
कब पुनः दर्श
होंगे इस बार
नन्हे कदम चलने लगे
तेरे कंधों पर
चढ़ने वो लगे

तेरा प्यार तेरी कहानियाँ
नन्हीं मासूम शिकायतो की
वो अनखुली पिटारियाँ
कहीं कटे ना
फिर एक और बचपन
बिन सिचे पिता के प्यार में
दो नन्हीं आँखे
तरसती रहें फिर से
पिता के इतज़ार में

माँ के आँचल में
सो ले आखिरी सुकून की रात
कल फिर जाना है तुझे
करने रखवाली
सरहद के द्वार की
फिर से आँखे
नम होंगी एक बार
सुना आंचल तड़पेगा
फिर से माँ तेरा
सदा के लिए इस बार

देश की सोई आँखे
फिर से जाग उठेंगी
सुनकर तड़प्ति
ममता की पुकार
एक फूल फिर मुरझाएगा
फिर देश सहम सा जाएगा
खुशबू से वतन को
फिर आज वो महकाएगा

लाल रंग का खून उसका
वो लाल रंग से रंग जाएगा
भेजा माँ ने लाल अपना
वो लाल चमन कर जायेगा
वो लाल वतन कर जायेगा
वर्दी पहन कर गया वो
आज तिरंगे में लिपटा आएगा

पिता के कांधे
अब झुक गए
कब तक उठाएगा वो
इस घर का भार
वो भी अब उमर के हाथो
इस ज़िन्दगी से ठग गए

मजबूती से जो खड़े रहे
वो दो पैर आज थक गए हैं
जिन कन्धों पर दुनिया झुमाई
आज उन्हीं कांधो ने
तेरी बेजान लाश उठाई
उस पिता के सीने में

आज फिर से गर्व के अंगारे
दहक गए हैं

एक बहन का वीर खो गया
वो अमर पुरुष शहीद हो गया
उस बहन की ये राखी
आज सदा के लिए छूट गई
खाई थी जो कसमे रक्षा की
वतन के फ़र्ज़ के आगे
वो कसम भी ना जाने कब
सरहद पर लड़ते-लड़ते
बेचारी यूँ ही टूट गई

सिन्दूर मांग में सजा था उसके
चूड़ी और पायल भी
प्रेम गीत गा रहे थे
उसके गजरों से घर
अब तक महक रहा था
आज उसकी आखिरी बात
याद आ गई
फिर उससे आखिरी मुलाकात
याद आ गई

मुस्कुराता सा एक चेहरा
आज हँसी से रूठ गया है
जो रिश्ता था सात जन्मों का
आज हमेशा के लिए टूट गया है
सदा सौभाग्य वती का
आशीर्वाद था मिला कभी
क्यूँ सौभाग्य उसका लुट गया है

फिर से रातें होंगी
फिर से सूरज निकलेगा
सूना जहान होगा उसका
दिल शमशान होगा उसका
सूनी हुई मांग उसकी
सूनी हुई कलाइयाँ
पायल और कंगन में
न अब छिड़ेगी लड़ाइयाँ
यादों में सदा रहेंगी उसके
तेरी छोटी-बड़ी अच्छाइयाँ

इस देश का एक वीर सो गया
एक परिवार का अस्तित्व खो गया

उसकी इस कुर्बानी से

एक जुनून भरी कहानी से

सिर्फ रोया ना एक घर उसका

परंतु सारा देश रो गया

हसरतें

हसरतें दिल की मेरी कैद हुई
तेरी इबादत में
दिल भी बेचैन हो उठा है
तेरी चाहत में

तूने देखा यूँ मुस्कुराकर
आँख भर आई है
बिछड़ा जो मेरा हमसफ़र था
उसकी याद आई है
रुक गई थी धड़कने न जाने कब
तू आज समझ पाई है
महकी जो साँस तेरे नाम पर
वह तो बस तन्हाई है

हसरतें दिल की मेरी कैद हुई
तेरी इबादत में
दिल भी बेचैन हो उठा है
तेरी चाहत में

कौन समझा मेरे हालातों को
तूने क्या-क्या सितम ढाए हैं
गैरों में महफिले तेरी लगी
फिर भी बेवफा हम ही कहलाए हैं
बैठा जो पलकें भिगोकर यूँ
ये तेरी जुदाई है
छोड़कर साथ वो गया यूँ
अब तो मौत आई है

हसरतें दिल की मेरी कैद हुई
तेरी इबादत में
दिल भी बेचैन हो उठा है
तेरी चाहत में